IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण एवं भाहरी क्षेत्र की बालिकाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का उनकी भौक्षिक आकांक्षा एवं भौक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

शोडार्थिनी

मालविका गुप्ता

शोध क्षात्र (शिक्षा विभाग)

शोध निर्देशक

डॉ राजीव कुमार सिंह

सहायक प्रवक्ता (शिक्षा विभाग)

<u>सारांश</u>

यह अध्ययन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की किशोरी बालिकाओं की सामाजिक स्वतंत्रता के स्तर का विश्लेषण करता है और यह जानने का प्रयास करता है कि यह स्वतंत्रता उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं तथा शैक्षिक उपलब्धियों को किस प्रकार प्रभावित करती है। सामाजिक स्वतंत्रता में उनके निर्णय लेने की क्षमता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक सहभागिता, एवं पारिवारिक और सामाजिक प्रतिबंधों की भूमिका को सम्मिलित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की छात्राओं के बीच सामाजिक स्वतंत्रता, शैक्षिक लक्ष्य एवं प्राप्त शैक्षणिक प्रदर्शन के अंतर को स्पष्ट किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्र की लड़कियों को अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त है, जिससे उनकी शैक्षिक आकांक्षाएं ऊँची हैं और वे बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन कर रही हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियाँ सामाजिक बंधनों, पारंपरिक सोच और संसाधनों की कमी के कारण अपेक्षाकृत पिछड़ जाती हैं।

यह शोध सामाजिक नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और अभिभावकों को यह समझने में सहायता प्रदान करता है कि लड़कियों की सामाजिक स्वतंत्रता बढ़ाकर उनकी शैक्षिक प्रगति को कैसे सुदृढ़ किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : सामाजिक स्वतंत्रता, शैक्षिक आकांक्षा, शैक्षिक उपलब्धि, ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, लड़कियों, तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना

किशोर किसी भी समाज की वास्तविक पूँजी हैं और समाज एवं राष्ट्र की भलाई के लिए इसे सुरक्षित एवं संरक्षित किया जाना चाहिए। किशोरावस्था बाल–काल की अंतिम अवस्था होती है। सम्पूर्ण बाल विकास में इस अवस्था का बहुत अधिक महत्व है। यह अवस्था शारीरिक और मानसिक उथल पुथल से भरी होती है। किशोरावस्था लोगों के जीवन में एक कठिन विकास अवधि का प्रतिनिधित्व करती है। किशोरावस्था में किशोर को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता हैच ये समस्याएं किशोरों के व्यवहार को सरलता से जटिलता की ओर ले जाती हैं। वर्तमान समय में किशोरों के समक्ष समस्याएं और बाधाएं अपेक्षाकृत अधिक हैं क्योंकि प्रतिस्पर्धा के कारण उनका जीवन अधिक गतिशील और जटिल होता जा रहा है। इन समस्याओं से किशोर जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता हैच उसके व्यवहार की प्रकृति इसी पर निर्भर करती है।

समायोजन की अवधारणा सबसे पहले डार्विन ने दी थी जिन्होंने इसे भौतिक दुनिया में जीवित रहने के लिए एक अनुकूलन के रूप रूप में इस्तेमाल किया था। मनुष्य अन्य व्यक्तियों पर आश्रित होने से उत्पन्न होने वाली शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मांगों को समायोजित करने में सक्षम है। समायोजन घर की जीवन स्थितियों में स्कूल में, वयस्क होने पर कार्यस्थल में और वृद्धावस्था में एक संगठनात्मक व्यवहार है। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें एक सुखी और खुशहाल जीवन की ओर ले जाती है। स्वस्थ समायोजन व्यक्ति के जीवन और शिक्षा में सामान्य विकास के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा किशोरों को वर्तमान और भविष्य की विभिन्न परिस्थितियों में स्वस्थ समायोजन के लिए प्रशिक्षित करती है। इस तर्क का तात्पर्य है कि शिक्षा और समायोजन परस्पर जुड़े हुए हैं और एक दूसरे के पूरक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे किशोरों के समायोजन की प्रव्रत्तियों और उनके अच्छे मानसिक स्वास्थ में योगदान करने वाले कारकों को समझें। समायोजन वह व्यवहार प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अथवा अन्य जीव अपनी विभिन्न आवश्यकताओं और उन आवश्यकताओं की पूर्ति में उत्पन्न होने वाली बाधाओं के बीच संतुलन बनाए रखते है। प्रत्येक जीवित प्राणी के सामने किसी न किसी प्रकार की परेशानियाँ तथा समस्याएँ आती रहती हैं। इन सभी समस्याओं को तथा जीवन की चुनौतियों को प्राणी किस प्रकार स्वीकार करता है इसी से उसकी समायोजन क्षमता का पता चलता है। किशोरों को समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है, किशोरावस्था में होने वाले तीव्र परिवर्तन इन समस्याओं का प्रमुख कारण बनते हैं। एक किशोर में स्थायित्व एवं समायोजन का अभाव होता है तथा इनका जीवन बहुत अधिक भावनात्मक होता है। परमेश्वरन (1957) ने किशोरों और वयस्कों की तुलना विभिन्न व्यक्तित्व परिवर्त्यों की। इस अध्ययन में यह देखा गया कि विभिन्न क्षेत्रोंय जैसे– दूसरों पर निर्भरता, प्रभाव प्रविष्टियाँ, भाई बहनों के रिश्ते तथा विषमलैंगिक सम्बन्ध में किशोरों की अपेक्षा वयस्क अधिक समायोजित होते हैं। एक अध्ययन (एस. डी. सिंह, 1961) में यह देखा गया कि अधिकाँश किशोर नैतिक तथा धार्मिक समस्याओं से अधिक परेशान रहते हैं। एक अन्य अध्ययन (कक्कड़ 1967) में देखा गया कि किशोरों मेंए समायोजन की समस्याएँ स्कूल की चिन्ता के कारण भी होती हैं। रेड्डी 1971 ने अपने अध्ययन द्वारा यह बताया कि दुर्बल आत्म–प्रतिमा, हीनता की भावनाए परिवार के प्रति अरुचि आदि कुछ ऐसे कारक हैं जो किशोरो ं के समायोजन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं।

यदि व्यक्ति अपनी योग्यताओं के अनुरूप ही अपनी आकांक्षाओं का निर्धारण करता है तो वह सहजता से प्रत्येक परिस्थिति के साथ समायोजन करने में सफल रहता है। किन्तु इसके विपरीत यदि व्यक्ति की आकांक्षाऐं उसकी योग्यता से अधिक अथवा बहुत कम होती हैं तो उसका समायोजन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी छात्र की सांख्यिकीय अभिक्षमता निम्न स्तर पर है किन्तु वह जीव विज्ञान के स्थान पर गणित विषय का चयन करता है तथा उसे अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती तब परिणामस्वरूप उसका व्यवहार कुसमयोजित हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति का आकाँक्षा स्तर उसके समायोजन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है।

समायोजन मुख्यतः तीन बातों पर निर्भर करता है –

1. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारोएं प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि में समन्वय जितना अधिक होता है, समायोजन उतना ही अच्छा होता है और यदि इनमें आवश्यकता से कम समन्वय है तो समायोजन दुर्बल होगा।

2. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारोएं प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि की पूर्ति किस मात्रा और किस रूप में हुई है इस पर भी समायोजन आधारित होता है। इनकी पूर्ति जितनी अधिक होती है समायोजन उतना ही अच्छा होता है और इनकी पूर्ति जितनी कम होती है समायोजन उतना ही दुर्बल होता है।

3. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारोएं प्रेरणाओं और लक्ष्य आदि सामाजिक मूल्यों से कहाँ तक मेल खाते हैं इससे भी समायोजन प्रभावित होता है। इनमें मेल जितना अधिक होगा, व्यक्ति का समायोजन उतना ही अच्छा होगा।

बोरिंग तथा उनके साथियों के अनुसार, समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्कताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थियों में संतुलन रखता है। समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। बालक चारों ओर के वातावरण में उपस्थित व्यक्तियों एवं वस्तुओं के संपर्क में आता है। इनमें से कुछ कम तथा कुछ अधिक महत्वपूर्ण हो सकती हैं। किशोर जिन व्यक्तियों एवं परिस्थियों के साथ प्रसन्नता व संतुष्टि का अनुभव करते हैं उनके साथ किशोर का समायोजन अच्छा होता है तथा जिन व्यक्तियों एवं परिस्थियों के साथ वह अप्रसन्नता व असंतुष्टि का अनुभव करते हैं उनके साथ किशोर का समायोजन अच्छा नहीं होता है। किसी भी बालक का वर्तमान एवं भविष्य सुखी और आनन्ददायक तभी हो सकता है, जब उसका व्यवहार समायोजित हो। समायोजन एक मत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है। प्रत्येक जीवित प्राणी के जीवन में कुछ न कुछ समस्याएँ आती रहती हैं व्यक्ति इन समस्याओं का समाधान किस प्रकार करता है यह उसके समायोजन पर काफी हद तक निर्भर करता है।

समायोजन बच्चे के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समायोजन एक गतिशील और निरंतर प्रक्रिया है। एक खुशहाल और समृद्ध जीवन जीने के लिए समायोजन एक पूर्व–अपेक्षित शर्त है। समायोजन शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों जैसी जरूरतों के बीच संतुलन बनाए रखने की एक प्रक्रिया है। किशोरावस्था व्यक्ति के विकास की सबसे महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण अवधि है। यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सेक्स और सामाजिक दृष्टिकोण में तेजी से क्रांतिकारी परिवर्तनों की अवधि है। यह तनाव और तूफान का एक दौर है जो किशोरों को अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना करने के लिए बनाता है। यह एक सक्रं मण अवधि है जिसके दौरान वे कई नई आदतों, व्यवहारों को सीखते हैं और कुछ पुरानी आदतों को छोड़ देते हैं। इस अवधि में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक शक्तियों का संतुलन खो जाता है और परिणाम यह होता है कि व्यक्ति को अपने स्वयं के साथ, परिवार के साथ और बड़े पैमाने पर समाज के साथ नया समायोजन करना पड़ता है। कुछ किशोर इन चुनौतियों को सकारात्मक रूप से बातचीत नहीं करते हैं और व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं की ओर ले जाते हैं जो उनके कुसमायोजन की ओर ले जाते हैं। अधिकांश छात्र कुंठाओं, संघर्षों, परिसरों, चिंताओं और चिंताओं से पीड़ित हैं। वे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और अन्य समायोजन में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

सुसमायोजित व्यक्ति की विशेषताएं

एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति अपने शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक कल्याण के सदंर्भ में पूर्ण समायोजन का आनन्द लेता है। उसकी दैहिक संरचना, शारीरिक विकास, शक्ति और क्षमताओं के संदर्भ में सुरक्षित और संतुष्ट महससू करता है। एक सुसमायोजित व्यक्ति अच्छी तरह से संतुलित भावनात्मक व्यवहार प्रदर्शित करता है। वह परिस्थिति की आवश्यकताओं और अपने स्वयं के कल्याण के अनुसार वांछित भावनाओं को उचित मात्रा में व्यक्त करने में सक्षम होता है। एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति सामाजिक रूप से

परिपक्व व्यक्ति है। सामाजिक योग्यता और सामाजिक दायित्वो ं के संदर्भ में उसके पास आवश्यक विकास संभावनाएं हैं। वह अपने सामाजिक वातावरण को जानता है और सामाजिक जीवन की मांगों के लिए स्वयं को समायोजित करने की इच्छा और क्षमता रखता है। स्वयं को नापसंद करना कुसमायोजन का एक विशिष्ट लक्षण है। एक समायोजित व्यक्ति में स्वयं के साथ–साथ दूसरों के लिए भी सम्मान होता है। एक सुसमायोजित व्यक्ति की आकांक्षा का स्तर उसकी अपनी शक्तियों और क्षमताओं की तुलना में न तो बहुत कम होता है और न ही बहुत अधिक होता है। ऐसे व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं, जैसे जैविक, भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताएं पूरी तरह से संतुष्ट होती हैं। वह भावनात्मक लालसा और सामाजिक अलगाव से ग्रस्त नहीं होता है। वह यथोचित रूप से सुरक्षित महससू करता है और अपने आत्मसम्मान को बनाए रखता है। एक सुसमायोजित व्यक्ति जानता है कि वस्तुओं, व्यक्तियों या गतिविधियों में अच्छाई की सराहना कैसे की जाती है। वह कमजोरियो ं और दोषों की खोज करने की कोशिश नहीं करता है। उसका अवलोकन आलोचनात्मक या दंडात्मक नहीं होता है। वह लोगों को पसंद करता है, उनके गुणों की प्रशंसा करता है और उनका स्नेह जीतता है।

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को एक सुखी और खुशहाल जीवन की ओर ले जाती है। यह व्यक्ति को अपने पर्यावरण की स्थितियों में वांछनीय परिवर्तन लाने की शक्ति और क्षमता प्रदान करता है। समायोजन व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। यह व्यक्ति की स्थिति की मांगों के अनुसार उसे जीवन के तरीके को बदलने के लिए राजी करता है।

स्वभाव से भावुक होने के कारण किशोर बालक अपना शारीरिक और मानसिक समायोजन उचित रूप से स्थापित नहीं कर पाता है। किशोरावस्था में अनेक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं व्यवहारिक परिवर्तन एवं विकास दिखाई देता है। इन परिवर्तनों के कारण उनकी रुचियों और इच्छाओं में काफी परिवर्तन होता है। किशोरावस्था तनाव, तथा संघर्ष की अवस्था है द्य इसी कारण इसे समस्याओं की आयु कहा गया है। किशोरावस्था में होने वाले तीव्र शारीरिक, मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक परिवर्तन इन समस्याओं का मुख्य कारण बनते हैं। इन समस्याओं का प्रभावी रूप में निदान किया जाना तभी सम्भव है जब किशोरों का समायोजन उत्तम हो।

किशोरों का व्यवहार, उपलब्धियाँ एवं जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण कितनी उच्च श्रेणी का होगा यह काफी सीमा तक किशोरों के उत्तम समायोजन पर निर्भर करता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किसी भी क्षत्रे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उससे सम्बन्धित ज्ञान का गहन अध्ययन तथा विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त कर लिया जाये। इस विषय पर कितना कार्य हुआ है यह भी जान लेना अति आवश्यक है। ये सम्पूर्ण जानकारी अध्ययन से जुड़ी आवश्यकता है। किशोरों के समायोजन स्तर से सम्बन्धित कुछ अध्ययन निम्नलिखित हैं–

परमेश्वरन (1957) ने सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में किशोर बालकों पर अध्ययन किया। अपने अध्ययनों में देखा कि जो छात्र बहुत कम या निम्न आय वाले परिवारों के समूह से थे उनका समायोजन उतना अच्छा नहीं था जितना कि उच्च आय वाले समूह का था । इनके अध्ययन के परिणाम यह भी बताते हैं कि पढ़े लिखे माता–पिता की सन्तानों का समायोजन अनपढ़ माता–पिता की सन्तानों से अच्छा था।

चहल एवं अन्य (2003) ने किशोरों के कल्याण में समायोजन, व्यक्तित्व, सामाजिक समर्थन तथा पारिवारिक वातावरण जैसे चरों के महत्व की जाँच लिंग के आधार पर करने के उददेश्य से यह अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ की महिला किशोरों के लिए पारिवारिक सामंजस्य, बौद्धिक, सांस्कृतिक तथा उपलब्धि अभिविन्यास, समाजीकरण एवं सहपाठियों के समर्थन का उनके कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान था जबकि पुरुष किशोरों के लिए पारिवारिक संघर्ष, सहपाठियों का समर्थन एवं सहपाठी के रूप में स्वयं के समायोजन का उनके कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान पाया गया।

हुसैन एवं अन्य (2008) ने यह अध्ययन किशोरों में शैक्षणिक तनाव एवं समायोजन स्तर ज्ञात करने तथा सरकारी एवं पब्लिक स्कूल के छात्रों के बीच समग्र समायोजन व शैक्षणिक तनाव एवं समायोजन के पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात करने के उददेश्य से किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि पब्लिक स्कूल के छात्रों में सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में शैक्षणिक तनाव अधिक था तथा समायोजन स्तर भी सरकारी स्कूल के छात्रो ं का पब्लिक स्कूल के छात्रों की तुलना में काफी बहे तर था।

गुप्ता एवं गुप्ता (2011) ने अपने अध्ययन के आधार पर पाया कि लड़कियाँ सामाजिक समायोजन में बेहतर थी जबकि शैक्षिक समायोजन में लडक़ॉ और लड़कियों का समायोजन समान स्तर का था।

गहलावत (2011) ने लिंग के आधार पर हाईस्कूल के छात्रों के समायोजन का अध्ययन किया। छात्रों में भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक तथा कुल समायोजन मे ं लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

रॉय एवं घोष (2012) ने प्रारंभिक किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था के छात्रों के बीच समायोजन पैटर्न पर एक अध्ययन किया। परिणाम से पता चलता है कि प्रारम्भिक किशोरावस्था और उत्तर किशोरावस्था के समूह समायोजन के घर, स्वास्थ्य और सामाजिक क्षेत्रों में एक दूसरे से सार्थक रूप से भिन्न हैं। लड़कियों ने लड़कों की तुलना में बेहतर समायोजन दिखाया। डेका (2017) ने माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के बीच समायोजन की समस्या पर अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि छात्राओं के शैक्षिक समायोजन समस्याओं के सम्बन्ध में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की किशोर छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है, लेकिन सामाजिक और भावनात्मक समायोजन समस्याओं के सम्बन्ध में शहरी और ग्रामीण छात्राओं के बीच सार्थक अंतर पाया गया।

कौर एवं चावला (2018) ने किशोरों में शैक्षणिक चिन्ता और स्कूल समायोजन का अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि अनाथालयों में रहने वाले किशोरों को अपने परिवार के साथ रहने वाले किशोरों की तुलना में शैक्षणिक चिन्ता कम थी और किशोर लड़कियों के स्कोर लड़कों की तुलना में अधिक थे । स्कूल समायोजन पर प्राप्त स्कोर से पता चलता है कि परिवारों के साथ रहने वाले किशोरों में अनाथालयों में रहने वाले किशोरों की तुलना में स्कूल समायोजन बेहतर था और कुल मिलाकर लड़कियों का समायोजन स्तर लड़कों से कम था ।

उद्देश्य– स्नातक स्तर के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उपकल्पना– स्नातक स्तर के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा।

विधि :

प्रतिदर्श– अध्ययन हेतु प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया। प्रतिदर्श में 60 किशोरों (30 पुरुष छात्रो ं एवं 30 महिला छात्रों) को सम्मिलित किया गया। (आयु वर्ग 17.21 वर्ष)

उपकरण : परिचय एवं विवरण :

छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर का मापन प्रो. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी पद द्वारा किया गया । यह मापनी समायोजन के 5 क्षेत्र गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन का मापन करती है। इस मापनी में 102 पद हैं जिनमें गृह समायोजन के 16, स्वास्थ्य समायोजन के 15, संवेगात्मक समायोजन के 31 तथा शैक्षिक समायोजन के 21 पद सम्मिलित हैं। यह समायोजन मापनी व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में प्रयोग की जाती है । मापनी पर कम प्राप्तांक बेहतर समायोजन को तथा अधिक प्राप्तांक खराब समायोजन को प्रदर्शित करते हैं। मापनी की विश्वसनीयता तथा वैधता उच्च स्तर की है।

समायोजन श्रेणियों का वर्गीकरण : Table – 1

समायोजन श्रेणियाँ	विवरण	प्राप्तांकों की सीमा	
		पुरुष	महिला
A	अति उत्कृष्ट	12 एवं इससे कम	12 एवं इससे कम
B	उत्तम	13–28	13–27
C	औसत	29–45	28–42
D	असंतोषजनक	46–61	42–57
E	अति असंतोषजनक	62 एवं इससे अधिक	58 एवं इससे अधिक

प्राप्तांकों की गणना की प्रविधि :

प्राप्तांकों की गणना के लिए पारदर्शी स्कोरिंग कुंजियाँ प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग से प्रदान की गयी हैं द्य इसमें केवल कुंजियों में बने सर्किल के तहत चिह्नित प्रतिक्रियाओं को अंक प्रदान किए जाते हैं तथा प्रत्येक ली गयी प्रतिक्रिया को 1 अंक प्रदान किया जाता है।

शोध अभिकल्पना :

शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक द्वि–स्थायी तुलनात्मक समूह अभिकल्पना प्रयोग की गयी है। इसमें दो स्थिर समूहों की आश्रित माप करके प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर अन्तर की सार्थकता की जाँच t परीक्षण द्वारा की गयी है। शोध अध्ययन में प्रतिदर्श N = 30 के लिए दोनों समूह के मध्य अंतर की सार्थकता की जाँच t-परीक्षण द्वारा की गयी है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

किशोरों के समायोजन मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा t-मान :

Subject	Mean	SD	t-value	Significance Level
किशोर	37.4	12.49		
किशोरियाँ	45.0	14.69	2.24	t मान 0.05 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर

छात्र एवं छात्राओं द्वारा दी गयी प्रतिक्रियाओ। के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों से मध्यमान, विचलन के वर्गों का योग ज्ञात कर। परीक्षण द्वारा का मान ज्ञात किया गया। प्राप्त मान 2.24 प्राप्त हुआ जो 58 के स्वतंत्रता अंशों पर 0.05 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर t table मान 2.00 से अधिक है। यहाँ 0.05 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः इस स्तर पर प्रथम उपकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होता है।

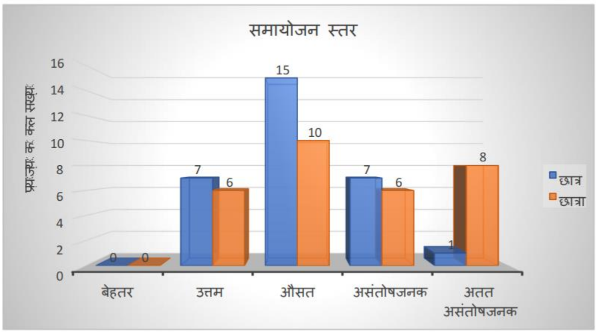

स्नातक स्तर के कुल 30 छात्रों में से अधिकाँश (15) किशोरों का कुल समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक) औसत स्तर पर पाया गया। अन्य 50 प्रतिशत छात्रों में से 7 छात्रों का कुल समायोजन स्तर उत्तम है, 7 छात्रों का कुल समायोजन स्तर असंतोषजनक तथा केवल 1 छात्र का कुल समायोजन स्तर अति असंतोषजनक है। 30 छात्रों के इस प्रतिदर्श में किसी भी छात्र का कुल समायोजन बहे तर नहीं पाया गया। समायोजन के विभिन्न आयामों में छात्रों का समायोजन स्तर एवं प्राप्त करने वाले छात्रों की कुल संख्या निम्न प्रकार हैं–

गृह समायोजन	बेहतर	उत्तम	औसत	असंतोषजनक	अति असंतोषजनक
छात्रों की कुल संख्या	0	13	10	2	5

स्वास्थ्य समायोजन	बेहतर	उत्तम	औसत	असंतोषजनक	अति असंतोषजनक
छात्रों की कुल संख्या	7	10	8	5	0

सामाजिक समायोजन	बेहतर	उत्तम	औसत	असंतोषजनक	अति असंतोषजनक
छात्रों की कुल संख्या	0	12	12	4	2

संवेगात्मक समायोजन	बेहतर	उत्तम	औसत	असंतोषजनक	अति असंतोषजनक
छात्रों की कुल संख्या	0	4	16	8	2

शैक्षिक समायोजन	बेहतर	उत्तम	औसत	असंतोषजनक	अति असंतोषजनक
छात्रों की कुल संख्या	1	4	15	10	0

छात्राओं के समायोजन स्तर का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि स्नातक स्तर के कुल 30 छात्राओं में से 10 छात्राओं का कुल समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक) औसत स्तर पर पाया गया। अन्य छात्राओं में से 6 छात्राओं का कुल समायोजन स्तर उत्तम पाया गया 6 छात्राओं का कुल समायोजन स्तर असंतोषजनक तथा 8 छात्राओ का कुल समायोजन स्तर अति असंतोषजनक पाया गया द्य समायोजन के विभिन्न आयामों में छात्राओं का समायोजन स्तर एवं उन्हें प्राप्त करने वाली छात्राओं की कुल संख्या निम्न प्रकार हैं–

गृह समायोजन	बेहतर	अच्छा	औसत	असंतोषजनक	बहुत असंतोषजनक
छात्राओं की कुल संख्या	2	6	6	11	5

स्वास्थ्य समायोजन	बेहतर	अच्छा	औसत	असंतोषजनक	बहुत असंतोषजनक
छात्राओं की कुल संख्या	0	10	13	6	1

सामाजिक समायोजन	बेहतर	अच्छा	औसत	असंतोषजनक	बहुत असंतोषजनक
छात्राओं की कुल संख्या	1	2	14	10	3

संवेगात्मक समायोजन	बेहतर	अच्छा	औसत	असंतोषजनक	बहुत असंतोषजनक
छात्राओं की कुल संख्या	0	4	10	9	7

भौक्षिक समायोजन	बेहतर	अच्छा	औसत	असंतोषजनक	बहुत असंतोषजनक
छात्राओं की कुल संख्या	0	3	10	9	8

स्नातक स्तर के कुल 30 छात्रों में से अधिकाँश (15) किशोरों का कुल समायोजन (गृह,

स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक) औसत स्तर पर पाया गया। अन्य 50 प्रतिशत छात्रों में से 7 छात्रों का कुल समायोजन स्तर उत्तम है, 7 छात्रों का कुल समायोजन स्तर असंतोषजनक तथा केवल। छात्र का कुल समायोजन स्तर अति असंतोषजनक है। 30 छात्रों के इस प्रतिदर्श में किसी भी छात्र का कुल समायोजन बहे तर नहीं पाया गया।

छात्राओं के समायोजन स्तर का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि हाईस्कूल स्तर के कुल 30 छात्राओं में से 10 छात्राओं का कुल समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक) औसत स्तर पर पाया गया। अन्य छात्राओं में से 6 छात्राओं का कुल समायोजन स्तर उत्तम पाया गया, 6 छात्राओं का कुल समायोजन स्तर असंतोषजनक तथा 8 छात्राओं का कुल समायोजन स्तर अति असतं ोषजनक पाया गया।

लगभग प्रत्येक क्षेत्र में किशोरों का समायोजन किशोरियों से भिन्न है। स्वास्थ्य समायोजन का अध्ययन करने पर पाया गया कि किशोर एवं किशोरियां दोनों ही अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत थे फिर भी किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन किशोरियों की तुलना में बेहतर पाया गया। इसी प्रकार संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन करने पर पाया गया कि किशोरियाँ, किशोरों की तुलना में अधिक संवेदनशील होती हैं। वे अपने अधिकतर निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भर रहती हैं जबकि किशोर अपने कार्यों के लिए आत्मनिर्भर होते हैं तथा अपने लगभग सभी कार्य स्वयं करते हैं। अध्ययन के परिणामों से अन्य क्षेत्रों जैसे गृह समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन में भी किशोरों का समायोजन किशोरियों की तुलना में बहे तर पाया गया।

कलावाला (1973) ने अपने अध्ययन में देखा कि किशोरों को व्यवसाय के सम्बन्ध में समायोजन करने में बहुत ज्यादा समस्याएँ उत्पन्न हुई, तथा किशोरियों को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई। उनके अध्ययन परिणामों से यह भी पता चलता है कि किशोरों का पारिवारिक समायोजन अच्छा था वही किशोरियों का समायोजन व्यवहारिक क्षेत्र के अतिरिक्त धर्म और नैतिकता की ओर अधिक था।

सिंह (1990) द्वारा 60 छात्र एवं 60 छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन किया गया तथा पाया कि संवेगात्मक समायोजन लिंग द्वारा सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

उपरोक्त अध्ययन भी इस तथ्य की पुष्टि करते है कि छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में अंतर होता है।

किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर के तुलनात्मक अध्ययनों के परिणामस्वरूप, शून्य उपकल्पना को स्वीकृत न करते हुए यह कहा जा सकता है कि ष्स्नातक स्तर के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सचूो :

• Deka,S. (2017). Adjustment problems among adolescent girl students of secondary schools. International Journal for Innovative Research in Multidisciplinary Field, 3(8), 191-195. Retrieved from www.ijirmf.com

• Gehlawat, M. (2011). A study of adjustment among high school students in relation to their gender. International referred research Journal, 3(33), 14-15.

• Gupta, M. & Gupta, R. (2011). Adjustment and scholastic achievement of boys and girls. International journal of business and management Research, 1(1), 29-33.

• Hurlock,B. (2009). Developmental psychology : A life span approach (5th ed.). New Delhi, Tata McGraw-Hill Education Private Limited.

• Hussain, A., Kumar, A., & Husain, A. (2008). Academic stress and adjustment among high school students. Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, 34, 70-73.

• Kaur H, Chawla A. (2018). A Study of Academic Anxiety and School Adjustment among Adolescents. Indian Journal of Psychiatric Social Work, 9(2) : 106-10.

• Parmeshwaran, E.G. (1957). Social Adjustment of a group of early adolescent boys. Journal of Psychology Researches, 1(3), 29-45.

• Roy, B.,Ghosh, S.M. (2012). Pattern of Adjustment among Early and Late Adolescent School Students. International Indexed and Referred Research Journal, 4(42), 20-21.

• Singh, A.K. (2010). Abnormal Psychology. Delhi, Motilaal Banarsidas Publication. © 2022 IJRTI | Volume 7, Issue 12 | ISSN: 2456-3315 IJRTI2212099 International Journal for Research Trends and Innovation (www.ijrti.org) 648

• Singh, A.K. (2012). Advanced General Psychology. Delhi, Motilaal, Banarsidas Publication.

• Srivastva,D.N. & Verma,P. (1989). Advanced Experimental Psychology. Agra, Vinod Pustak Mandir Publication.

Internet sources :

• http://psycnet.apa.org/Journals/edu/94/4/795/

• http://en.wikipedia.org/wikipedia/mental_health

• http://www.globalmentalhealth.org/category/country/India

• http://www.ukessays.com

• http://dspace.library.uu.nl>handle

• http://scholar.google.co.in

• census india.gov.in